18 वीं शताब्दी में इंग्लैंड मे कृषि क्रान्ति

परिचय:18वी सताब्दी के मध्य में इंग्लैंड में हुई कृषि क्रान्ति न केवल इंग्लैंड बल्कि पूरे यूरोप के आर्थिक तथा सामाजिक जीवन को प्रभावित किय।18वीं शताब्दी सदी के प्रारंभ में ब्रिटेन एक कृषि प्रधान देश था। कृषि के क्षेत्र में इस समय विशेष परिवर्तन नहीं हो पाया था। लेकिन धीरे-धीरे परिवर्तन आना प्रारंभ हुआ। जनसंख्या में वृद्धि हुई और साथ ही औद्योगिक विकास हुआ। कुल राष्ट्रीय आमदनी भी बढ़ा। जिससे जीवन स्तर ऊंचा हु। साथ ही साथ इस दौरान शहरीकरण की प्रवृत्ति बड़ी। इन कारणों से खाद्यान्न और मांस की मांग में वृद्धि हुई और कृषि के नए तरीके अपनाने की तत्परता बढ़ गई। क्योंकि कृषि उत्पादन में अधिक लाभ होने लगा। इसी समय नहरों और सड़कों के निर्माण के कारण से जमींदारों के लिए खाद्यान्न को दूर-दूर के क्षेत्रों में भेजना भी संभव हो गया। फ्रांसीसी क्रांतिकारी युद्ध के दौरान विदेशों से खाद्यान्न मंगाना कठिन हो गया तब भी कृषि के नए नए तरीके अपनाए गए। इस प्रकार इस सब घटको द्वारा इतने महत्वपूर्ण परिवर्तन लाए गए कि इन परिवर्तनों को कृषि क्रांति का संज्ञा दी गई

कृषि क्रांति के उत्तरदाई व्यक्ति|

इंग्लैंड में पुरानी पद्धति कृषि से कार्य होता था । परंतु स्टुअर्ट कॉल सिंह किसी में परिवर्तन होने लगा और इसका परिणाम सामाजिक और आर्थिक दशा पर पड़ने लगा गांव की अवस्था तथा उपज में काफी प्रसन्न दिखाई इन सब परिवर्तनों के लिए खास व्यक्तियों का सहयोग भी रहा।

(1) जेथरो टूल : वर्कशायर के जेथारो टूल बोने के लिए ड्रिल यंत्र का आविष्कार किया। इस यंत्र से बीज एक-एक पंक्ति में कुछ स्थान छोड़ छोड़ कर पढ़ते थे जिससे फसल अच्छी होती थी तथा अच्छे किस्म के बीज भी लगाए जाते थे।सिंचाई के लिए खेतों में नालियां बनाई गई । खेत में खाद डालने का भी व्यवस्था किया जिससे उपज काफी बढ़ गयी।

2 रॉबर्ट वेस्टर्न: इन्होंने शलजम तथा जड़ों वाला फसलों को बोने पर जोर दिया इससे जमीन की खोई हुई शक्ति बिना परती छोड़े हुए प्राप्त हो जाती ज थी। अब भूमिका का एक तिहाई भाग भी कृषि काम मैं आने लगा तथा चारे की जमीन छोड़ने की समस्या खत्म हो गई।

3 Lord townshend: उन्होंने टूल तथा रोबट वेस्टर्न के सिद्धांतों पर कृषि में उपयोग किया। जमीन को अधिक उपजाऊ बनाने के लिए खाद का प्रयोग किया, टूल के यंत्र ड्रीम से बुवाई और रोबोट वेस्टर्न की सरगम की खेती की। उसने फसल चक्र भी बनाया और बदल बदल कर खेतों में फसलें लगाने लगा। उन्होंने तीन फसलों की पद्धति को

त्याग कर 4 फसलों की पद्धति को जन्म दिया।नारफोक कृषि के लिए प्रसिद्ध हो गया townshend को लोग 'turnip townshend 'कहने लगे।

4 जॉर्ज तृतीय: जॉर्ज ने भी कृषि के कार्य में अधिक रूचि मी इसीलिए उसे कृषक चार्ज भी कहते हैं। उसने विंडसर में के स्थान पर एक आदर्श फार्म की स्थापना की।

5 Robert bakewell: bakewell में पशुओं की दशा सुधारने का काम किया ।वह लीसेस्टरशायर का किसान था ।उसने पशु जगत ने क्रांति ला दी। एक नए प्रकार के भेड़ तैयार किया क जिसका वजन 60 pound था जबकि पुराने भी 21 pound के होते थे इतना ही नहीं गाय पहले से तिगुना दूध अधिक देने लगी।

6 सरआर्थर यंग: कृषि सुधार को में उनका नाम सबसे अधिक प्रसिद्ध है उन्होंने किसानों के क्लबों तथा संस्थाओं को अलग से स्थापित करने के पक्ष में था वह प्रदर्शनी कर नए-नए ढंग से कृषि करने के लिए किसानों का मार्ग प्रदर्शित करना चाहता था ।उसमें कई एंक्लोजर एक्ट पारित करवाए ।वह चकबंदी के पक्ष में था। ट्रेवेलियन ने यंग को कृषि संबंधी नई पद्धति का फरिश्ता कहा है।

कृषि क्रांति के मुख्य विशेषताएं

1 कृषि में पूजी का प्रयोग _

०कृषि क्रांति की मुख्य विशेषता थी जिसमें सबसे पहले स्थान में पूजी का आता है। 18वीं सदी में औपनिवेशिक व्यापार एवं विदेशी व्यापार के चलते काफी धन की वृद्धि हुई। धन वृद्धि के साथ ही पूंजीपति वर्ग का जन्म हुआ । पूंजीपति वर्ग केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से भी काफी शक्तिशाली था। देश की बढ़ती बेकारी की समस्या का हल निकालना पूंजीपति वर्ग का प्रधान कर्तव्य था। कृषि में पूंजी लगाने का उद्देश्य धन वृद्धि करना था इसलिए विज्ञानिक तरीकों का प्रयोग होने लगा। नए नए औजारों का आविष्कार के फलस्वरूप कृषि में पहले के की अपेक्षा कम मजदूर लगते थे। परंतु छोटे पूंजीपतियों के लिए क्या संभव नहीं था क्योंकि छोटे पूंजीपतियों को औजारों खरीद के लिए पूंजी नहीं थी । जिससे वे नए औजारों के अविष्कार में पूंजी खर्च नहीं कर सके। किंतु बड़े पूंजीपति के लिए यह काम आसान था। इस तरह कृषि में पूंजी की लागत कृषि क्रांति की प्रमुख विशेषता थी।

2 घेराबंदी का काम

- इंग्लैंड में 15वीं शताब्दी में घेराबंदी का शुरू हुआ था किंतु 18वीं शताब्दी में फिर से घेराबंदी का काम आरंभ हुआ। देश की जनसंख्या में काफी वृत्ति हो चुकी थी और इसके साथ ही ही खाद्य सामग्री की समस्या भी बढ़ गई थी। और बढ़ती हुई आबादी के लिए पर्याप्त मात्रा में पैदावार नहीं होते थे अतएव वे बेकार जमीन को आबाद करने का प्रयास किया गया। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ बिछड़े हुए क्षेत्रों को सुदृढ़ एवं घेरा के अंदर लाने की सलाह दी । घेराबंदी के पक्ष में करीब करीब देश की कुल आबादी के लोगों थे। संभवत विरोध दल अल्पमत में थी। 1801 ईसवी में एक कानून पास किया गया जिसके द्वारा घेराबंदी के कार्य को प्रोत्साहन दिया गया। भूमि पतियों के बहुत सी बिखरे हुए जमीन

आबाद हो गये और उसे घेरे के अंदर लाया गया। घेरे के अंदर लाने के चलते जमीन की मालगुजारी भी बड़ी और भूमिपति को भी अधिक लाभ हुआ।। इसके अतिरिक्त बहुत सारी जमीन चरागाह के काम में आई थी उसे घेरे के अंदर चलाया गया। बहुत से किसान मजदूरी पाने वाले मजदूर बन गए।कृषिक्रांति की दूसरी प्रमुख विशेषता आम जमीन को घेरे केअंदर लाना था।जो 19वीं शताब्दी में देश की खाद्य समस्या का हल करने में उपयोग लाया गया ।

3 कृषिक समुदाय

कृषि क्रांति की तीसरी विशेषता .कृषिक समुदाय था। घेराबंदी आंदोलन के चलते किसानों को बहुत नुकसान उठाना पड़ा कोमा घेराबंदी का खर्च भी किसानों को ही देना पड़ता था उसके बदले में बहुत कम जमीन मिलता था इसका का कारण यह था कि किसानों की जमीन पर अधिकार अधिकांशत रस्मो रिवाज के अनुसार था। अतः बहुत से किसानों !का अधिकार जमीन से हट गया। ऊंची कीमत के चलते किसानों का जीवन दयनीय हो गया। अधिक पूंजी नहीं रहने के चलते वे नए तरीकों का उपयोग नहीं कर सकते थे। उनके खेत भी छोटे-छोटे टुकड़ों में बट गए थे अतः इन टुकड़ों की रक्षा ठीक से नहीं होती थी और परिणाम स्वरूप कृषिक समुदाय को कृषि से विशेष फायदा नहीं होता था। परिस्थिति से विवश होकर बहुत से किसान कारखानों में काम करने लगे और कुछ मजदूरी पाने वाले मजदूर की कोटि में आ गए।

कृषक समुदाय से ही संबंधित छोटे-छोटे भूमि पतिथे जिनकी हालत 18वीं शताब्दी में दयनीय हो गई। छोटे भूपति के पास नए-नए अविष्कार के लिए पूंजी नहीं थी। पुराने औजारों से खेती करने में फायदा नहीं होता था।च अतः छोटे भूमि पति कृषि का अपेक्षा शासन काल में भाग लेने के लिए इच्छुक थे। लेकिन बड़े भूपति छोटे भूमि पतियों को शासनकाल में भाग लेने पर प्रतिबंध लगा दिया।त औद्योगिक क्रांति के चलते ऐसे भूमि पतियों के पास आमदनी का कोई दूसरा साधन न था इस तरह छोटे भूमिपतियों बड़े भूमिपत्तियों के हाथ अपनी जमीन बेच दी। और अपनी पूंजी का उपयोग छोटे छोटे व्यवसाय में करने लगे।!अतएव कृषक समुदाय के साथ ही छोटे-छोटे भूमि पतियों को भी कृषि क्रांति के चलते विशेष नुकसान उठाना पडा।

4 भूमि का केंद्रीकरण

कृषि क्रांति की चौथी विशेषता बड़े जमींदारों के हाथ भूमि ;का केंद्रीकरण था। नए नए औजारों का उपयोग बड़े-बड़े क्षेत्रों में किया जा सकता था।अतएव छोटे क्षेत्र वाले जमींदारों को जब कृषि से विशेष लाभ नहीं हुआ तो उन्होंने अपनी जमीन बड़े भूमिपत्तियों को हाथ भेज दिए। बड़े भूमि पतियों ने ने अपना वैवाहिक संबंध पूंजीपति वर्ग के साथ जोड़ा और दोनों वर्गों के संबंध बड़े-बड़े रियासत कायम हुए। रियासत के अधिकारियों के पास पर्याप्त मात्रा में पूंजी थी जो नए तरीकों से खेती कर सकते थे। 1793 से1850 के बीच इंग्लैंड में बड़े-बड़े फार्म कायम हुए जिससे जमींदारों को विशेष लाभ हुआ।

5 कृषि कला का विकास !

.कृषि क्रांति की पांच विशेषता कृषि कल मे विकास था। कृषि कला में विकास लाने की प्रेरणा चीजों के दाम में वृद्धि के चलती मिली। इंग्लैंड की जनसंख्या 18 वीं सदी में काफी बढ़ गई थी बढ़ती हुई जनसंख्या को खिलाने की समस्या देश में उत्पन्न हो गई थी इसी समय नेपोलियन के साथ इंग्लैंड को लड़ाई में भी उलझना पर युद्ध के चलते विदेश से माल मंगाने में इंग्लैंड को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था इस समय इंग्लैंड में फसल अच्छी नहीं हुई थी। अतः चीजों के दाम में अधिक वृद्धि हुई। पैदावार और अधिक बढ़ाने के लिए और भी जमीनों को खेती के योग्य बनाना आवश्यक हो गया ।अतएव हजारों एकड़ जमीन जो दलदल बंजर और कटीली थी उसे खेती के योग बनाने का काम प्रारंभ हुआ। नए-नए अविष्कार के फलस्वरूप उत्पादन का कार्य भी प्रारंभ हुआ।! पैदावार बढ़ाने के लिए नए-नए हाल और गाड़ी का विस्तार किया गया और खेत में खाद डालने की प्रथा भी आरंभ हुई।

.नए-नए मशीन के अविष्कारों के फल स्वरुप मजदूरी भी कम लगती थी और कम खर्च के द्वारा अधिक लाभ होता था ।कृषि में विकास लाने के उद्देश्य से विकास क्लब खोले गये जिसमें कृषि संबंधी विषयों की शिक्षा देने का प्रबंध किया गया। इसी समय राजकीय कृषि समिति का संगठन किया गया। किसानों को खेती में सुधार लाने के लिए इस संस्था द्वारा द्वारा विशेष मौका दिया जाता था। विभिन्न संस्थाओं के द्वारा कृषि कला में बहुत परिवर्तन हुए। नए ढंग से खेती के आरंभ होने के कारण पशु तथा भेड़ों की नस्ल नेमी सुधार लाया गया 18 वीं शताब्दी के पूर्व इंग्लैंड में जानवरों की हालत बहुत अच्छी नहीं थी अधिक जानवर ढूंढते होते थे रॉबर्ट बैकवेल जैसे विद्वान ने जानवरों के नस्ल में काफी सुधार आया।

इस प्रकार कृषि क्रांति के चलते हैं

निष्कर्ष:

यह कहा जा सकता है कि कृषि क्रांति की विशेषता अभूतपूर्व थी।कृषि क्रांति के द्वारा ही कृषि क्षेत्र में पूंजीपतियों ने पूंजी लगाना शुरु कर दीया। खेत के चारों ओर घेराबंदी कृषि क्रांति के द्वारा संभव हुआ कृषि क्रांति में भूमि को जिम्मेदारों के हाथों में केंद्रित कर दिया। नस्ल सुधार की प्रक्रिया भी कृषि क्रांति की प्रमुख विशेषताओं में से एक थी। इसके चलते ही अनेक छोटे-बड़े यंत्रों का आविष्कार हुआ

अंततः यहसमुचित प्रतीत होता है की कृषि क्रांति की विशेषताएं युगांतकारी थी।

प्रश्न

.

1 इंग्लैंड की कृषि क्रांति की विशेषताओं का वर्णन करें?

2 इंग्लैंड में कृषि क्रांति किस प्रकार हुई? स्पष्ट कीजिए।|

Course co ordinator,Dr Anwarul Haque Ansari